सलिला संस्कृत

कक्षा – 9

सत्र 2024–25

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढे एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे → **App** की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता **Profile** का चयन करें।

1 पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

2 मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

3 सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

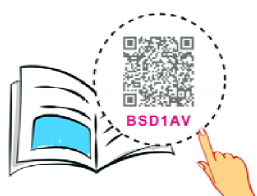

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

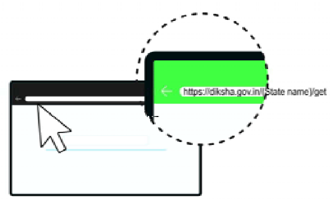

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

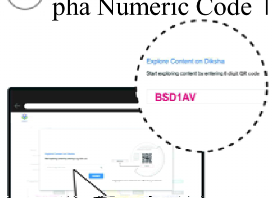

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

QYPZA1

प्रकाशन वर्ष : 2024

© संचालक, एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

मार्गदर्शक : डॉ. पूर्वा भारद्वाज, दिल्ली, डॉ. रमाकांत अग्निहोत्री, दिल्ली

सहयोग : त्रिपुरारि कुमार ठाकुर

समन्वयक : डॉ. विद्यावती चन्द्राकर, एस.सी.ई.आर.टी. छ.ग.

विषय समन्वयक : बी.पी. तिवारी, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

लेखन समूह : बी.पी. तिवारी, ललित कुमार शर्मा, स्वरूपनारायण मिश्र, योगेश्वर उपाध्याय, रतिराम पटेल, पुरुषोत्तम लाल देशमुख, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

चित्रांकन : राजेंद्र सिंह ठाकुर

ले आउट : रेखराज चौरागड़े

प्रकाशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

आमुख

माध्यमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों में संस्कृत भाषा के प्रति अनुराग उत्पन्न करना है। संस्कृत शिक्षण के माध्यम से छात्रों में सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना व मानवीय मूल्यों का सतत विकास करना है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के अनुरूप छात्रों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग एवं विभिन्न कौशलों के विकास पर बल दिया गया है। नवीन पाठ्यपुस्तक में छत्तीसगढ़ प्रदेश के वनों, छत्तीसगढ़ की विभूतियों, पौराणिक एवं अर्वाचीन कथाओं, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए ब्रेललिपि और पर्यावरण आदि से संबंधित पाठों का समावेश किया गया है, जैसे–छत्तीसगढस्य वनानि, श्रीगहिरागुरुः, ब्रेललिपिः आदि। पाठों में सरल संस्कृत अभ्यास प्रश्न व गतिविधियों को अधिकाधिक महत्त्व दिया गया है। छात्र संस्कृत को व्यवहारगत बनाकर संस्कृत में वार्तालाप कर सकें, ऐसा प्रयास किया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में राष्ट्रीय स्तर के महत्त्वपूर्ण शिक्षा मंडलों की पाठ्यपुस्तकों का सहयोग व मार्गदर्शन लिया गया है।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

इस पाठ्य पुस्तक को स्वरूप प्रदान करने में जिन विशेषज्ञों की सहभागिता रही है, परिषद् उनके प्रति आभार प्रकट करती है। निश्चय ही यह पुस्तक छात्रोपयोगी सिद्ध होगी। नवीन पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने में विज्ञजनों के बहुमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

भूमिका

भाषाई इतिहास की दृष्टि से संस्कृत का इतिहास अत्यंत प्राचीन है – हजारों वर्षों का। संस्कृत यूरेशिया यानी यूरोप और एशिया भूखंड के भारोपीय भाषा परिवार की भाषा है। इसे भौगोलिक रूप से सबसे अधिक व्यापक और साहित्यिक उत्कर्ष की दृष्टि से सर्वोपरि माना जाता है।

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। इसका साहित्यिक प्रवाह वैदिक युग से आज तक अबाध गति से चल रहा है। इसकी महिमा को देखकर इसे देवभाषा कहा गया है। यह अधिसंख्यक भारतीय भाषाओं की जननी तथा सम्पोषिका मानी जाती है।

संस्कृत भाषा के प्राचीनतम ग्रंथ हैं वेद। कहा जा सकता है कि वेद आर्यों की सभ्यता और संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के एकमात्र साधन हैं। भारतवर्ष में क्षेत्रीय विषमताओं के होने पर भी जिन तत्त्वों ने इस देश को एक सूत्र में बाँध रखा है, उनमें संस्कृत भाषा तथा इसके साहित्य का योगदान रहा है। मानवीय मूल्यों के विकास की दृष्टि से भी इनका अद्वितीय महत्त्व है।

संस्कृत शिक्षण के सामान्य उद्देश्य हैं –

1. संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान कराना जिससे संस्कृत के सरलांशों को सुनकर या पढ़कर छात्र समझ सकें एवं मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति दे सकें।
2. संस्कृत साहित्य के प्रति छात्रों में अभिरुचि उत्पन्न करना।
3. संस्कृत साहित्य की प्रमुख विधाओं, प्राचीन और नवीन रचनाओं से छात्रों को परिचित कराना।
4. छात्रों में राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए नवमी कक्षा की 'सलिला' नामक पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। इसमें प्राचीन रचनाओं के साथ आधुनिक संस्कृत रचनाओं का भी समावेश किया गया है। कुछ पाठों के आरंभ में पाठ के संदर्भ दिए गए हैं ताकि छात्रों को पाठ–प्रवेश में आसानी हो। छात्रों की सुविधा के लिए 'शब्दार्थाः' शीर्षक के अंतर्गत पाठ में आए नवीन शब्दों के हिन्दी में अर्थ दिए गए हैं।

कुछ पाठों के अंत में पाठ की विषयवस्तु को पूरी तरह खोलने के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार की सामग्री दी गई है। जैसे 'भारतीवसन्तगीतिः' के अंत में सारे श्लोकों का अन्वय और अर्थ बताया गया है। वहीं 'प्रत्यभिज्ञानम्' पाठ में केवल एक श्लोक है जिसका अर्थ अंत में दिया गया है। इसी तरह 'भ्रान्तो बालः' पाठ के अंत में 'पाठयामास' या 'बोधयामास' जैसे अपेक्षाकृत रूप से कम प्रचलित शब्दों के बारे में बताया गया है।

पाठों के साथ आनेवाले चित्र न केवल रोचकता बढ़ाते हैं बल्कि विषयवस्तु को नया आयाम देते हैं। छत्तीसगढ़ की लोक शैली के पुट और चटक रंगों ने इन चित्रों को और अधिक सुंदर बना दिया है।

पाठ्यपुस्तक के अंत में व्याकरण खंड है। उसमें छात्रों की आवश्यकतानुसार संक्षेप में व्याकरण के नियमों को प्रस्तुत किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में वर्तनी से संबंधित परसवर्ण के नियमों को कहीं–कहीं शिथिल किया गया है। सामान्यतः भाषा की प्रवृत्ति सरलीकरण की होती है। इस लिए वर्तनी के सरलीकृत रूप को हमने मान्यता दी है। जैसे – 'गङ्गा' के स्थान पर 'गंगा' और 'चञ्चल' के स्थान पर 'चंचल'।

हम जानते हैं कि कक्षा में बच्चे विविध भाषाओं की संपदा लेकर आते हैं और यह बहुभाषिकता संसाधन है। इसलिए शिक्षक कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता को आधार बनाकर पाठों का अध्यापन करें।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक को छात्रों के अनुरूप बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है तथापि इसको और अधिक उपयोगी बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों का स्वागत है।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

संस्करणम्

कक्षा – 9वीं

पाठ्यक्रम

कुल कालखण्ड – 180

पूर्णांक – 100

सैद्धांतिक – 75

प्रायोगिक / प्रायोजना कार्य – 25

पाठ्यक्रम संरचना

क्र.	इकाई का नाम	विषय वस्तु	कालखण्ड	अंक
1.	प्रथम		–	–
	वर्ण एवं वर्तनी	वर्ण परिचय एवं उच्चारण स्थान	15	01
2.	द्वितीय			
	शब्दरूप (i) स्वरान्त (ii) व्यञ्जनान्त (iii) सर्वनाम (iv) संख्या	बालक, हरि, गुरु, पितृ, रमा, मति, नदी, धेनु, मातृ, फल, वारि, मधु राजन् भवत्, आत्मन्, चन्द्रमस्,गच्छत् सर्व, यत्, इदम्, एतद्, तद्, किम् (सभी तीनों लिङ्गों में) और अस्मद्, युष्मद् 51 से 100 तक	15	03
3.	तृतीय			
	धातु रूप	भू, पा, पच्, खेल्, लिख्, स्था, दृश्, अस्, लभ्, सेव् (लट्,लङ्,लृट्,लोट्,विधिलिङ् लकारों में)	15	03
4.	चतुर्थ			
	सन्धि–परिचय एवं भेद	1. स्वर सन्धि (दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, अयादि, पूर्वरूप, पररूप, प्रकृतिभाव) 2. व्यञ्जन एवं विसर्ग सन्धियों का सामान्य परिचय	15	02

क्र.	इकाई का नाम	विषय वस्तु	कालखण्ड	अंक
5.	i ञ्चम्			
	समास–परिचय एवं भेद	तत्पुरूष, द्वन्द्व, द्विगु, अव्ययीभाव, कर्मधारय एवं बहुव्रीहि समास का परिचय	15	02
6.	षष्ठ			
	प्रत्यय, अव्यय एवं उपसर्ग	(क) कृदन्त – क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु, तुमुन्, तव्यत्, अनीयर् (ख) तद्वित – मतुप्, इनि, ढक्, त्व, त्रल्, तमप्, तरप्, धा, ठञ्, मयट् (ग) अव्यय व उनका अनुप्रयोग (घ) उपसर्ग	15	2+2+1+1=6
7.	सप्तम्			
	कारक	कारकों का सामान्य परिचय, शुद्ध प्रयोग एवं उस पर आधारित अनुवाद	10	03
8.	अष्टम्			
	रचना (i) निबन्ध (ii)वाक्य एवं अनुच्छेद	सरल संस्कृत वाक्यों में निबन्ध रचना वाक्य एवं अनुच्छेद लेखन	10	5 + 4
9.	नवम्		10	4 + 4
	अपठित गद्यांश एवं पत्र लेखनम्	(i) पाठ्येतर गद्यांश का अभ्यास (ii) संस्कृत भाषा में पारिवारिक एवं प्रार्थना पत्रों का लेखन		
			120	कुल अंक 37

पाठ्यक्रम– सरंचना (पाठ्यपुस्तक खण्ड)

क्रमांक	इकाई का नाम	पाठ	पाठ्यवस्तु	कालखण्ड	अंक
	पाठ्यपुस्तक		(i) गद्यांश आधारित प्रश्न (ii) संवाद आधारित प्रश्न (iii) श्लोक आधारित प्रश्न (iv) कंठस्थ श्लोक (v) भावार्थ लेखन (vi) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (vii) संस्कृत में प्रश्नोत्तर	60	06 06 06 05 03 07 05
				60	38
			महायोग	180	कुल अंक 75
1.	प्रथम इकाई	प्रथमः पाठः द्वितीयः पाठः	वन्दना सम्भाषणम् न त्यक्तव्यः अभ्यासः		
2.	द्वितीय इकाई	तृतीयः पाठः चतुर्थः पाठः	छत्तीसगढस्य वनानि सुभाषितानि		
3.	तृतीय इकाई	पञ्चमः पाठः षष्ठः पाठः	प्रत्यभिज्ञानम् सन्तश्रीगहिरागुरूः		
4.	चतुर्थ इकाई	सप्तमः पाठः अष्टमः पाठः	ब्रेललिपिः सिकतासेतुः		
5.	पञ्चम् इकाई	नवमः पाठः	रघुवंशम्		
6.	षष्ठम् इकाई	दशमः पाठः	विश्वबन्धुत्वम्		
7.	सप्तम् इकाई	एकादशः पाठः	भारतीवसन्तगीतिः		
8.	अष्टम् इकाई	द्वादशः पाठः	लौहतुला		
9.	नवम् इकाई	त्रयोदशः पाठः	भ्रान्तो बालकः		

पाठ्यक्रम–प्रायोगिक/प्रायोजन कार्य

प्रायोगिक कार्य :–

(क) मौखिक कार्य : (कोई 2) 3×2 = 06

(i) संस्कृत में परिचय

(ii) समाचार पत्र

(iii) वार्तालाप

(iv) किसी पात्र/चरित्र पर अभिव्यक्ति

अंक विभाजन

(i) मौखिक – 06 अंक

(ii) अभिलेख –03 अंक

(iii) लिखित – 16 अंक

योग – 25 अंक

(ख) लिखित कार्य – (कोई 4) 4×4 = 16

(i) दैनिक जीवन में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों का चयन

(ii) जीवनवृत्त लेखन

(iii) नीति/सुभाषित श्लोक संकलन

(iv) चुटकलों का संग्रह

(v) ध्येय वाक्यों का संग्रह

(vi) अनुच्छेद लेखन

(vii) संयुक्ताक्षर संग्रह

(viii) दैनिक उपयोगी वस्तुओं का संस्कृत नाम

(xi) रचनाओं एवं रचनाकारों की जानकारी

(ग) प्रायोगिक अभिलेख – 03 अंक

उपर्युक्त का लिखित प्रायोगिक पुस्तिका तैयार करना।

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ		पृष्ठ क्रमांक
	वन्दना		01
1	सम्भाषणम्	संवादपाठः	02–05
2	न त्यक्तव्यः अभ्यासः	गद्यपाठः	06–09
3	छत्तीसगढस्य वनानि	गद्यपाठः	10–13
4	सुभाषितानि	पद्यपाठः	14–17
5	प्रत्यभिज्ञानम्	गद्यपाठः	18–23
6	सन्तश्रीगहिरागुरुः	गद्यपाठः	24–27
7	ब्रेललिपिः	गद्यपाठः	28–31
8	सिकतासेतुः	गद्यपाठः	32–38
9	रघुवंशम्	पद्यपाठः	39–44
10	विश्वबन्धुत्वम्	गद्यपाठः	45–48
11	भारतीवसन्तगीतिः	पद्यपाठः	49–53
12	लौहतुला	गद्यपाठः	54–58
13	भ्रान्तो बालकः	गद्यपाठः	59–64
	व्याकरणखण्डम्		65–134

QMWIVU

वन्दना

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।

जो कुन्द के फूल, चन्द्रमा, बर्फ और हार के समान श्वेत हैं, जो शुभ्र वस्त्र पहनती हैं, जिनके हाथ उत्तम वीणा से सुशोभित हैं, जो श्वेत कमल के आसन पर बैठती हैं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देव जिनकी सदा स्तुति करते हैं और जो सब प्रकार की जड़ता हर लेती हैं, वे भगवती सरस्वती मेरी रक्षा करें।

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्।।

शरद काल में उत्पन्न कमल के समान मुखवाली और सब मनोरथ को देनेवाली शारदा सब सम्पत्तियों के साथ हमारे मुख कमल में सदा निवास करें।

सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने।
विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तुते।।

हे महाभाग्यवती, ज्ञानस्वरूपा, कमल के समान विशाल नेत्रवाली, ज्ञानदात्री सरस्वति! मुझको विद्या दो, मैं तुमको प्रणाम करता हूँ।